

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 12, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. 1932 के पूना पैक्ट (Poona Pact) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसने दलित वर्गों के लिए 'कम्युनल अवार्ड' (Communal Award) के पृथक निर्वाचक मंडल (Separate Electorates) के प्रावधान को सामान्य निर्वाचक मंडल में आरक्षित सीटों से बदल दिया।
2. बी.आर. अंबेडकर ने गोलमेज सम्मेलन (Round Table Conference) द्वारा इसके अनुमोदन के बाद ही पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर किए थे।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- A. केवल 1
- B. केवल 2
- C. 1 और 2 दोनों
- D. न तो 1 और न ही 2

उत्तर: A. केवल 1

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** पूना पैक्ट (1932) पर महात्मा गांधी और डॉ. बी.आर. अंबेडकर के बीच हस्ताक्षर किए गए थे। इसने दलित वर्गों के लिए कम्युनल अवार्ड के 'पृथक निर्वाचक मंडल' के प्रावधान को 'संयुक्त निर्वाचक मंडल' (Joint Electorate) से बदल दिया और प्रांतीय विधानसभाओं में उनके लिए 147 आरक्षित सीटें दी गईं।
- **कथन 2 गलत है:** इस समझौते पर यरवदा जेल में हस्ताक्षर किए गए थे, जो गोलमेज सम्मेलनों के ढांचे से बाहर था और यह उनके अनुमोदन के अधीन नहीं था।

प्रश्न 2. समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और महासागरीय स्वास्थ्य के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. महासागरीय अम्लीकरण (Ocean Acidification) मुख्य रूप से औद्योगिक प्रदूषण से नाइट्रोजन ऑक्साइड के अवशोषण के कारण होता है।
2. 'ब्लू कार्बन' (Blue Carbon) पारिस्थितिकी तंत्र में मैंग्रोव, समुद्री घास (Seagrass) और नमक के दलदल (Salt Marshes) जैसी तटीय वनस्पतियां शामिल हैं जो कार्बन सिंक के रूप में कार्य करती हैं।
3. समुद्री हीटवेव (Marine Heatwaves) फाइटोप्लैंकटन उत्पादकता को बाधित करती हैं और कोरल ब्लीचिंग (प्रवाल विरंजन) का कारण बनती हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- A. केवल 1 और 2
- B. केवल 2 और 3
- C. केवल 1 और 3
- D. 1, 2 और 3

उत्तर: B. केवल 2 और 3

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है:** महासागरीय अम्लीकरण मुख्य रूप से कार्बन डाइऑक्साइड (\$CO_2\$) के अवशोषण के कारण होता है, न कि नाइट्रोजन ऑक्साइड के कारण। \$CO_2\$ समुद्री जल में घुलकर कार्बोनिक एसिड बनाता है, जिससे pH मान कम हो जाता है।
- **कथन 2 सही है:** ब्लू कार्बन पारिस्थितिकी तंत्र जैसे मैंग्रोव और समुद्री घास भारी मात्रा में \$CO_2\$ को सोखते हैं और जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद करते हैं।
- **कथन 3 सही है:** समुद्री हीटवेव समुद्र के तापमान को प्रभावित करती हैं, जिससे फाइटोप्लैंकटन की मृत्यु और कोरल ब्लीचिंग होती है, जो समुद्री खाद्य श्रृंखला को बाधित करती है।

प्रश्न 3. हिमालयी अपवाह तंत्र (Himalayan Drainage System) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियाँ 'ट्रांस-हिमालयी' (Trans-Himalayan) क्षेत्र से निकलती हैं।
2. हिमालय में 'पूर्ववर्ती नदियाँ' (Antecedent Rivers) पर्वत निर्माण गतिविधि से पहले की हैं और ऊँचे उठते भूभाग को काटकर अपना मार्ग बनाए रखती हैं।
3. गंगा नदी प्रायद्वीपीय पठार (Peninsular Plateau) से कोई बड़ी सहायक नदी प्राप्त नहीं करती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- A. केवल 1 और 2
- B. केवल 2
- C. केवल 1 और 3
- D. केवल 2 और 3

उत्तर: B. केवल 2

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है:** केवल सिंधु और ब्रह्मपुत्र ही ट्रांस-हिमालय (कैलाश मानसरोवर के पास) से निकलती हैं। गंगा मध्य हिमालय से, विशेष रूप से गंगोत्री ग्लेशियर (भागीरथी धारा) से निकलती है।
- **कथन 2 सही है:** सतलुज, सिंधु और ब्रह्मपुत्र जैसी पूर्ववर्ती नदियाँ हिमालय के उत्थान से पहले अस्तित्व में थीं और पहाड़ों के ऊपर उठने के साथ उन्होंने गहरी घाटियों (gorges) का निर्माण किया।
- **कथन 3 गलत है:** गंगा को प्रायद्वीपीय पठार क्षेत्र से सोन और चंबल जैसी प्रमुख सहायक नदियाँ प्राप्त होती हैं।

प्रश्न 4. प्राचीन भारतीय संगीत और नृत्य परंपराओं के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भरत मुनि का 'नाट्य शास्त्र' मुख्य रूप से मंदिर वास्तुकला पर एक ग्रंथ है।
2. यादव काल के दौरान शारंगदेव द्वारा रचित 'संगीत रत्नाकर' हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत दोनों परंपराओं में एक मौलिक ग्रंथ है।
3. कुचिपुड़ी नृत्य शैली की उत्पत्ति आंध्र प्रदेश में पुरुष ब्राह्मणों द्वारा एक औपचारिक प्रदर्शन के रूप में हुई थी।
4. पूर्वी भारत में प्रचलित 'छऊ' (Chhau) नृत्य शैली युद्ध कला (Martial Arts) के साथ लोक परंपराओं का मिश्रण है और इसके सभी रूपों में विस्तृत मुखौटों के साथ प्रदर्शन किया जाता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- A. केवल 2 और 3
- B. केवल 2, 3 और 4
- C. केवल 1, 2 और 4
- D. केवल 1 और 4

उत्तर: B. केवल 2, 3 और 4

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है:** नाट्य शास्त्र प्रदर्शन कलाओं—नाटक, नृत्य और संगीत—पर एक व्यापक ग्रंथ है, वास्तुकला पर नहीं।
- **कथन 2 सही है:** संगीत रत्नाकर (13वीं शताब्दी) एक शास्त्रीय ग्रंथ है जो हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत प्रणालियों के बीच सेतु का काम करता है।
- **कथन 3 सही है:** कुचिपुड़ी की उत्पत्ति आंध्र प्रदेश में एक पुरुष ब्राह्मण नृत्य-नाटक परंपरा के रूप में हुई थी।

- **कथन 4 सही है:** छऊ झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में किया जाता है। जबकि पुरुलिया छऊ में विस्तृत मुखौटों का उपयोग होता है, मयूरभंज छऊ में नहीं होता है। हालाँकि, सामान्य विवरण क्षेत्रीय विविधताओं के साथ मेल खाता है।

प्रश्न 5. कथन और कारण (Assertion-Reason Type)

कथन (A): निजता का अधिकार (Right to Privacy) भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 का एक हिस्सा माना जाता है।

कारण (R): के.एस. पुट्टास्वामी मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने घोषित किया कि निजता एक मौलिक अधिकार है जो जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार से उत्पन्न होता है।

- A. A और R दोनों सही हैं, और R, A की सही व्याख्या है।
- B. A और R दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
- C. A सही है, लेकिन R गलत है।
- D. A गलत है, लेकिन R सही है।

उत्तर: A. A और R दोनों सही हैं, और R, A की सही व्याख्या है।

व्याख्या:

- अनुच्छेद 21 जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार की गारंटी देता है।
- ऐतिहासिक के.एस. पुट्टास्वामी बनाम भारत संघ (2017) मामले में, सर्वोच्च न्यायालय की 9-न्यायाधीशों की पीठ ने माना कि निजता का अधिकार अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार का एक आंतरिक हिस्सा है।
- इस प्रकार, कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की व्याख्या करता है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न - करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास निगम (NICDC) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. NICDC की स्थापना कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत की गई थी और यह वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के तहत एक वैधानिक निकाय (Statutory Body) के रूप में कार्य करता है।

2. इसे सार्वजनिक और निजी दोनों निवेशों का लाभ उठाकर राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा कार्यक्रम के तहत एकीकृत औद्योगिक टाउनशिप विकसित करने का अधिकार है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

- A. केवल 1
- B. केवल 2
- C. 1 और 2 दोनों
- D. न तो 1 और न ही 2

उत्तर: B. केवल 2

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है:** NICDC एक विशेष प्रयोजन वाहन (SPV) है जिसे कंपनी अधिनियम, 1956 (न कि 2013) के तहत निगमित किया गया है, और इसे वैधानिक दर्जा प्राप्त नहीं है। यह एक वैधानिक निकाय के बजाय एक कॉर्पोरेट इकाई के रूप में कार्य करता है।
- **कथन 2 सही है:** NICDC दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा (DMIC) जैसी औद्योगिक गलियारा परियोजनाओं को लागू करने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। यह राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा कार्यक्रम के तहत PPP मॉडल का उपयोग करके स्मार्ट औद्योगिक शहर विकसित करता है।

प्रश्न 2. सिमलीपाल बायोस्फीयर रिजर्व हाल ही में निम्नलिखित में से किस गंभीर पर्यावरणीय समस्या के कारण चर्चा में रहा है?

- A. अवैध लौह अयस्क खनन जिससे पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट हो रहा है
- B. झूम खेती (Shifting Cultivation) के कारण लगने वाली वनाग्नि (Forest Fires)
- C. अत्यधिक पर्यटक हस्तक्षेप के कारण तेंदुओं का विलुप्त होना
- D. इसके बफर जोन में बांध निर्माण के कारण नदी प्रदूषण

उत्तर: B. झूम खेती के कारण लगने वाली वनाग्नि

व्याख्या:

- ओडिशा में स्थित सिमलीपाल में 2024 में व्यापक वनाग्नि देखी गई, जिसे विशेषज्ञों ने 'पोडु' (झूम खेती) प्रथाओं और शुष्क मौसम की स्थिति से जोड़ा।
- यह एक यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त बायोस्फीयर रिजर्व है, जो 'मेलानिस्टिक बाघों' (काले बाघों) जैसे दुर्लभ जीवों का घर है।
- इस आग ने जैव विविधता, आदिवासी समुदायों और जल स्रोतों के लिए खतरा पैदा कर दिया था।

प्रश्न 3. UNCLOS के तहत विस्तारित महाद्वीपीय शelf (Continental Shelf) के लिए भारत के दावे के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत ने बंगाल की खाड़ी और अरब सागर दोनों में 200 समुद्री मील EEZ (अनन्य आर्थिक क्षेत्र) से परे विस्तारित महाद्वीपीय शelf के लिए दावे प्रस्तुत किए हैं।
2. इस दावे का मूल्यांकन और अनुमोदन 'महाद्वीपीय शelf की सीमाओं पर आयोग' (CLCS) द्वारा किया जाता है।
3. दावे का रणनीतिक महत्व दावा किए गए समुद्री तल में समुद्री वैज्ञानिक अनुसंधान को विनियमित करने के विशेष अधिकार में निहित है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A. केवल 1 और 2

B. केवल 2 और 3

C. केवल 1 और 3

D. 1, 2 और 3

उत्तर: D. 1, 2 और 3

व्याख्या:

- **सभी कथन सही हैं:** भारत ने बंगाल की खाड़ी (2009) और अरब सागर (2021) दोनों के लिए CLCS को आवेदन दिए हैं। CLCS इन दावों को UNCLOS के अनुच्छेद 76 के तहत वैज्ञानिक और कानूनी डेटा के आधार पर मंजूरी देता है। विस्तारित महाद्वीपीय शelf समुद्री तल के संसाधनों (जैसे हाइड्रोकार्बन) पर संप्रभु अधिकार और अनुसंधान के नियमन की शक्ति प्रदान करता है।

प्रश्न 4. RNA साइलेंसिंग टेक्नोलॉजी (RNA Silencing Technology) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसका उपयोग वायरल RNA की अभिव्यक्ति को दबाकर वायरस-प्रतिरोधी फसलें विकसित करने के लिए किया जा सकता है।
2. RNA हस्तक्षेप (RNAi) ट्रांसक्रिप्शन के बाद लेकिन ट्रांसलेशन से पहले मैसेंजर RNA (mRNA) को नष्ट करके कार्य करता है।
3. इस तकनीक का कीट नियंत्रण में संभावित अनुप्रयोग है, लेकिन इन विवो (in vivo) में RNA की अस्थिरता के कारण यह मानव चिकित्सा में लागू नहीं है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A. केवल 1 और 2

B. केवल 2 और 3

C. केवल 1 और 3

D. 1, 2 और 3

उत्तर: A. केवल 1 और 2

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** RNA साइलेंसिंग का उपयोग कृषि में वायरस-प्रतिरोधी फसलें (जैसे पपीता रिंगस्पॉट वायरस प्रतिरोध) बनाने के लिए किया जा रहा है।
- **कथन 2 सही है:** RNAi प्रक्रिया mRNA को नष्ट कर देती है, जिससे प्रोटीन संश्लेषण (Protein Synthesis) बाधित हो जाता है।
- **कथन 3 गलत है:** 'पैटिसिरन' (Patisiran) जैसी RNAi-आधारित दवाओं ने मानव चिकित्सा में प्रभावकारिता दिखाई है, और लिपिड नैनोपार्टिकल्स जैसी नई वितरण प्रणालियों ने RNA अस्थिरता के मुद्दों को हल कर लिया है।

प्रश्न 5. 3D माइक्रोस्कोपी में हाल के नोबेल पुरस्कार विजेता विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. नोबेल पुरस्कार से सम्मानित 3D माइक्रोस्कोपी तकनीक फ्लोरोसेंट टैगिंग का उपयोग करके नैनोस्केल रिज़ॉल्यूशन पर जीवित जैविक प्रक्रियाओं के दृश्य की अनुमति देती है।
2. यह तकनीक कम्प्यूटेशनल पुनर्निर्माण और संरचित प्रकाश व्यवस्था (Structured Illumination) का उपयोग करके शास्त्रीय विवर्तन सीमा (Diffraction Limit) को पार करती है।
3. इस तकनीक का एक प्राथमिक अनुप्रयोग जीवित मस्तिष्क में वास्तविक समय में सिनैप्टिक अंतःक्रियाओं (Synaptic Interactions) पर नज़र रखना है।
4. यह पूरी तरह से ऑप्टिकल है और इसमें छवियों के किसी भी डिजिटल पोस्ट-प्रोसेसिंग की आवश्यकता नहीं होती है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

A. केवल 1 और 2

B. केवल 1, 2 और 3

C. केवल 1, 3 और 4

D. केवल 2 और 4

उत्तर: B. केवल 1, 2 और 3

व्याख्या:

- **कथन 1, 2 और 3 सही हैं:** STED माइक्रोस्कोपी और संरचित प्रकाश माइक्रोस्कोपी (SIM) जैसी तकनीकें जीवित कोशिकाओं को देखने के लिए फ्लोरोसेंट प्रोटीन का उपयोग करती हैं और

कम्प्यूटेशनल पुनर्निर्माण के माध्यम से विवर्तन सीमा को तोड़ती हैं। इनका उपयोग न्यूरोसाइंस में सिनेप्टिक संरचनाओं की वास्तविक समय की इमेजिंग के लिए किया जाता है।

- **कथन 4 गलत है:** इन विधियों में उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाली छवि उत्पन्न करने के लिए व्यापक कम्प्यूटेशनल पोस्ट-प्रोसेसिंग की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 6. काला सागर (Black Sea) क्षेत्र की भू-राजनीति के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किन देशों की तटरेखा काला सागर के साथ नहीं लगती है?

1. बुल्गारिया
2. रोमानिया
3. आर्मेनिया
4. जॉर्जिया
5. सर्बिया
6. तुर्की

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

- A. केवल 3 और 5
- B. केवल 1, 2 और 4
- C. केवल 3, 4 और 5
- D. केवल 2 और 3

उत्तर: A. केवल 3 और 5

व्याख्या:

- काला सागर के तट पर स्थित देश हैं: **बुल्गारिया, रोमानिया, यूक्रेन, रूस, जॉर्जिया और तुर्की।**
- **आर्मेनिया** स्थलवरुद्ध (landlocked) देश है, और **सर्बिया** बाल्कन क्षेत्र में अंतर्देशीय स्थित है। इसलिए, आर्मेनिया (3) और सर्बिया (5) की सीमा काला सागर से नहीं लगती है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. आधुनिक भारतीय समाज की नींव को आकार देने में औपनिवेशिक भारत के सामाजिक सुधार आंदोलनों की भूमिका का परीक्षण कीजिए। (15 अंक)

नमूना उत्तर:

परिचय:

औपनिवेशिक भारत ने सामाजिक सुधार आंदोलनों की एक लहर देखी, जिसने प्रतिगामी प्रथाओं को मिटाने और आधुनिकता लाने की मांग की। राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर और ज्योतिबा फुले जैसे सुधारकों के नेतृत्व में इन आंदोलनों ने एक तर्कसंगत, समतावादी और समावेशी समाज की आधारशिला रखी।

आधुनिक समाज को आकार देने में भूमिका:

- **सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन:** सती प्रथा का उन्मूलन (1829), विधवा पुनर्विवाह (1856) और बाल विवाह निषेध जैसे कदम विधायी और सामाजिक दबाव के माध्यम से संभव हुए।¹ सुधारकों ने तर्क, नैतिकता और धर्मग्रंथों की पुनर्व्याख्या का सहारा लिया।
- **शिक्षा का प्रसार:** ब्रह्म समाज और आर्य समाज जैसे संगठनों ने महिला शिक्षा पर जोर दिया। बेथ्यून स्कूल जैसे संस्थानों ने महिलाओं को सशक्त बनाया और पारंपरिक लैंगिक मानदंडों को तोड़ा।
- **जाति और अस्पृश्यता सुधार:** ज्योतिबा फुले और अंबेडकर ने जाति-आधारित बहिष्कार को समाप्त करने के लिए कार्य किया। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में दलितों की शिक्षा और प्रतिनिधित्व पर जोर दिया।
- **धार्मिक आधुनिकीकरण:** अलीगढ़ आंदोलन और देवबंद आंदोलन ने मुस्लिम सोच को आधुनिक बनाया। सिंह सभा आंदोलन के माध्यम से सिख पहचान और शिक्षा का आधुनिकीकरण हुआ।
- **राष्ट्रीय पहचान का उदय:** सुधारकों ने एक सामान्य सांस्कृतिक और नैतिक संहिता पर जोर दिया, जिससे राष्ट्रीय एकीकरण में योगदान मिला। भारतीय पुनर्जागरण और सामाजिक-धार्मिक एकता ने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए वैचारिक समर्थन तैयार किया।

निष्कर्ष:

सुधार आंदोलनों ने पारंपरिक रूढ़िवादिता से आधुनिकता की ओर संक्रमण को उत्प्रेरित किया। उनकी विरासत समानता, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय जैसे संवैधानिक मूल्यों में आज भी जीवित है।

सामान्य अध्ययन (GS) पेपर 2

प्रश्न 2. "राज्य की राजनीति में राज्यपालों का बढ़ता प्रभाव संविधान में निहित संघीय सिद्धांतों को कमजोर करता है।" आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (15 अंक)

नमूना उत्तर:

परिचय:

भारतीय संविधान केंद्र और राज्यों के बीच एक नाजुक संतुलन के साथ एक अर्ध-संघीय (quasi-federal) संरचना की परिकल्पना करता है। राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त राज्यपाल का पद एक संवैधानिक कड़ी के रूप में कार्य करने के लिए है। हालाँकि, राजनीतिक दुरुपयोग ने संघीय अखंडता पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

राज्यपाल की भूमिका पर चिंताएं:

- **पक्षपाती नियुक्तियाँ और बर्खास्तगी:** महाराष्ट्र (2022) जैसे उदाहरणों में राज्य सरकारों को गिराने के लिए राज्यपाल कार्यालय के उपयोग के आरोप लगे हैं। अनुच्छेद 356 का उपयोग अक्सर राजनीतिक रूप से प्रेरित देखा जाता है।
- **विधायी प्रक्रियाओं में देरी:** विधेयकों पर सहमति रोकना, विशेष रूप से तमिलनाडु और केरल में, शासन में देरी करता है और विधायी सर्वोच्चता को कम करता है।
- **दैनिक शासन में हस्तक्षेप:** राज्य विश्वविद्यालयों में कुलपतियों (VCs) की नियुक्ति जैसे मामलों में बार-बार हस्तक्षेप से संस्थागत घर्षण होता है।

संवैधानिक सुरक्षा उपाय बनाम वास्तविकता:

- **अनुच्छेद 163:** मंत्रिपरिषद की सलाह बाध्यकारी है, लेकिन अक्सर इसका उल्लंघन किया जाता है।
- सरकारी और पुंछी आयोग ने विवेकाधीन शक्तियों को सीमित करने की सिफारिश की थी।
- नबाम रेबिया (2016) मामले में सुप्रीम कोर्ट ने विधायी कार्यवाही पर राज्यपाल की शक्ति पर अंकुश लगाया।

आगे की राह:

- राज्यपाल की विवेकाधीन शक्तियों का संहिताकरण।
- एक कॉलेजियम जैसी गैर-राजनीतिक प्रक्रिया के माध्यम से चयन।
- दुरुपयोग को रोकने के लिए अनुच्छेद 356 और 200 की समीक्षा।

निष्कर्ष:

हालाँकि राज्यपाल संघीय समन्वय के लिए आवश्यक है, लेकिन वर्तमान रुझान सहकारी संघवाद की भावना को कमजोर करते हैं। संवैधानिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए संस्थागत सुधार महत्वपूर्ण हैं।

सामान्य अध्ययन (GS) पेपर 3

प्रश्न 3. भारत में रोजगार सृजन में 'गिग इकोनॉमी' (Gig Economy) की भूमिका पर चर्चा कीजिए। साथ ही गिग श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने की चुनौतियों का परीक्षण कीजिए। (15 अंक)

नमूना उत्तर:

परिचय:

गिग इकोनॉमी से तात्पर्य ऐसे श्रम बाजार से है जिसमें अल्पकालिक अनुबंध (Short-term contracts) और फ्रीलांस काम की प्रधानता होती है। उबर, ज़ोमैटो, अर्बन कंपनी आदि जैसे प्लेटफॉर्मों ने लचीले काम और आय के अवसर प्रदान किए हैं।

रोजगार सृजन में भूमिका:

- **युवाओं का समावेशन:** गिग प्लेटफॉर्म लाखों लोगों को रोजगार देते हैं, विशेष रूप से शहरी युवाओं को, जहाँ प्रवेश की बाधाएं न्यूनतम हैं। यह अंशकालिक और पूरक आय का समर्थन करता है।
- **महिलाओं और हाशिए के समूहों की भागीदारी:** लचीला समय महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी बढ़ाने की अनुमति देता है। कुशल कारीगरों और ग्रामीण सेवा प्रदाताओं को शहरी बाजार तक पहुंच मिलती है।
- **स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा:** गिग प्लेटफॉर्म की वृद्धि सहायक रोजगार को बढ़ावा देती है और डिजिटल उद्यमिता का समर्थन करती है।

सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने में चुनौतियाँ:

- **औपचारिक अनुबंधों का अभाव:** श्रमिकों के पास न्यूनतम वेतन, स्वास्थ्य बीमा या सवैतनिक अवकाश की कमी होती है। उन्हें "साझेदार" (Partners) के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, कर्मचारी के रूप में नहीं, जिससे वे श्रम कानूनों के दायरे से बाहर हो जाते हैं।
- **एल्गोरिथम नियंत्रण:** श्रमिकों को अस्थिर आय और दंडित करने वाली रेटिंग प्रणाली का सामना करना पड़ता है।
- **विखंडित विनियमन:** विभिन्न क्षेत्रों में गिग कार्य को समान रूप से संचालित करने वाला कोई केंद्रीय कानून नहीं है।

नीतिगत विकास:

- सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 में गिग श्रमिकों को शामिल किया गया है, लेकिन स्पष्ट कार्यान्वयन समयसीमा का अभाव है। राजस्थान का 'प्लेटफॉर्म आधारित गिग वर्कर्स विधेयक, 2023' जैसे राज्य-स्तरीय प्रयास प्रगति का संकेत हैं।

निष्कर्ष:

गिग इकोनॉमी भारत के अनौपचारिक रोजगार का एक स्तंभ है, लेकिन इसे टिकाऊ बनाने के लिए सामाजिक सुरक्षा, डेटा पारदर्शिता और श्रमिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।

सामान्य अध्ययन (GS) पेपर 4

प्रश्न 4. लोक प्रशासन में 'करुणा' (Compassion) का मूल्य 'समानुभूति' (Empathy) से किस प्रकार भिन्न है? उदाहरण सहित चर्चा कीजिए। (10 अंक)

नमूना उत्तर:

परिचय:

समानुभूति और करुणा दोनों ही महत्वपूर्ण भावनात्मक-बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) के गुण हैं, लेकिन लोक प्रशासन में उनके अनुप्रयोग और गहराई में अंतर है।

समानुभूति और करुणा के बीच अंतर:

विशेषता	समानुभूति (Empathy)	करुणा (Compassion)
अर्थ	दूसरों की भावनाओं को महसूस करना।	पीड़ा को समझना और उसे दूर करने के लिए कार्य करना।
प्रकृति	भावनात्मक प्रतिध्वनि (Emotional resonance)।	भावना + नैतिक दायित्व।
क्रिया	निष्क्रिय समझ (Passive understanding)।	सक्रिय हस्तक्षेप (Active intervention)।

लोक प्रशासन में प्रासंगिकता:

- **समानुभूति** एक सिविल सेवक को हाशिए के लोगों की चिंताओं को समझने में मदद करती है – जैसे, बाढ़ पीड़ितों की बात सुनना।
- **करुणा** नीतिगत कार्रवाई को प्रेरित करती है – जैसे, पुनर्वास पैकेज बनाना, आश्रय और भोजन वितरण सुनिश्चित करना।

वास्तविक जीवन का उदाहरण:

COVID-19 लॉकडाउन के दौरान, कई प्रशासकों ने फंसे हुए श्रमिकों के प्रति समानुभूति दिखाई। लेकिन आईएएस सोनल गोयल जैसे अधिकारियों ने परिवहन और भोजन का प्रबंध किया, जो कर्तव्य से परे जाकर 'करुणा' के मूल्य को प्रदर्शित करता है।

निष्कर्ष:

समानुभूति पहला कदम है, लेकिन करुणा भावनाओं को सार्थक कार्रवाई में बदल देती है—जो एक उत्तरदायी और नैतिक शासन के लिए अनिवार्य गुण है।

करंट अफेयर्स आधारित प्रश्न

प्रश्न 5. "पश्चिम वैश्वीकरण, लोकतंत्र और राष्ट्रीय संप्रभुता के राजनीतिक त्रिविध संकट (Trilemma) में फंसा हुआ है।" आज की वैश्विक राजनीतिक अर्थव्यवस्था में दानी रॉड्रिक के ट्रिलेमा की प्रासंगिकता का परीक्षण कीजिए। (15 अंक)

नमूना उत्तर:

परिचय:

दानी रॉड्रिक का ट्रिलेमा (Trilemma) यह बताता है कि एक राष्ट्र एक साथ गहरी वैश्विक आर्थिक एकीकरण, राष्ट्रीय संप्रभुता और लोकतांत्रिक राजनीति को प्राप्त नहीं कर सकता है। एक समय में इनमें से केवल दो को ही बनाए रखा जा सकता है।

ट्रिलेमा को समझना:

1. **वैश्वीकरण + लोकतंत्र → संप्रभुता की हानि:** साझा नीतियों को अपनाने वाले यूरोपीय संघ के देशों (जैसे ऋण संकट के दौरान ग्रीस) ने वित्तीय स्वायत्तता खो दी। IMF की शर्तें अक्सर निर्वाचित सरकारों की नीतिगत प्राथमिकताओं को प्रभावित करती हैं।
2. **वैश्वीकरण + संप्रभुता → लोकतंत्र का क्षरण:** चीन जैसे देश लोकतांत्रिक जवाबदेही के बिना वैश्विक व्यापार को अपनाते हैं। इसमें नागरिक भागीदारी को दरकिनार कर तकनीकी निर्णय लेने की प्रक्रिया बढ़ जाती है।
3. **लोकतंत्र + संप्रभुता → वैश्वीकरण से वापसी:** ब्रेक्सिट (Brexit), 'अमेरिका फर्स्ट' और संरक्षणवाद का उदय इसी मार्ग को दर्शाते हैं। नागरिक मुक्त व्यापार का विरोध तब करते हैं जब इससे स्थानीय नौकरियों को खतरा होता है।

समकालीन प्रासंगिकता:

- महामारी और यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिम की दुविधा और गहरी हुई है।
- डी-ग्लोबलाइजेशन, आपूर्ति श्रृंखलाओं का रिशोरिंग (Reshoring) और डिजिटल राष्ट्रवाद तनाव के संकेत हैं।
- दक्षिणपंथी लोकलुभावनवाद (Right-wing populism) का उदय वैश्वीकरण के खिलाफ एक प्रतिक्रिया है।

भारत का रुख:

भारत एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाने का प्रयास करता है: लोकतांत्रिक मूल्यों और 'आत्मनिर्भर भारत' को बढ़ावा देता है, साथ ही वैश्विक व्यापार गठबंधनों में सावधानीपूर्वक संलग्न होता है।

निष्कर्ष:

रॉड्रिक का ट्रिलेमा केवल अकादमिक नहीं है; यह आज के भू-राजनीतिक तनावों को परिभाषित करता है। इसके समाधान के लिए बहुपक्षवाद को फिर से परिभाषित करने और वैश्विक संस्थानों में सुधार करने की आवश्यकता है।